॥ श्रीश्रीगुरु-गौराङ्गौ जयतः ॥

श्री श्री भागवत-पत्रिका

ऑनलाइन-संस्करण

राष्ट्रभाषा हिन्दीमें श्रीश्रीरूप-रघुनाथकी वाणीकी अनुपम वाहिका

वर्ष—१७ संख्या—१-३ प्रबन्ध क्रमांक-१२

नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री
श्रीमद्भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराजको समर्पित
एवं
नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री
श्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजके
आदेश-निर्देश और प्रेरणानुसार

श्रील गुरुदेवकी शतवार्षिकी-आविर्भाव-तिथिपूजाके उपलक्ष्यमें

श्रील भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजके हरिकथामृत-सिन्धुका एक बिन्दु—

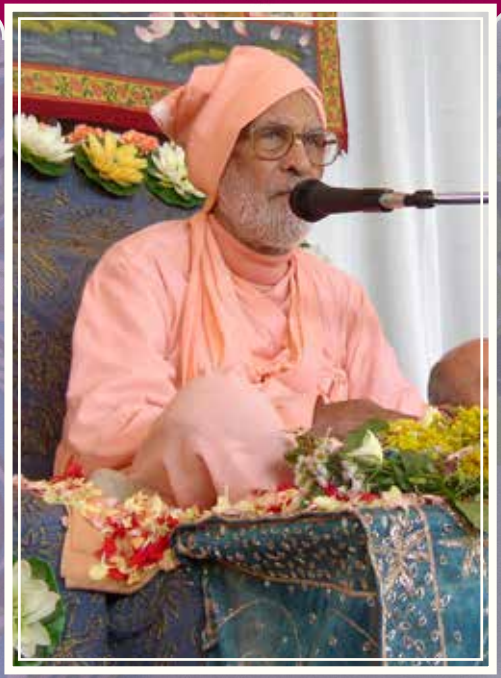

हरिकथाके श्रवणमात्रसे ही भक्तिराज्यमें सबकुछ प्राप्त होगा

(भाग-३)

[२२ अप्रैल, १९९४को श्रीकेशवजी गौड़ीय मठ, मथुरामें श्रीमद्भागवतम् दशम-स्कन्धपर प्रदत्त हरिकथासे उद्धृत—]

ज्ञानेप्रयासमुदपास्य नमन्त एव
जीवन्ति सन्मुखरितां भवदीयवार्त्ताम्।
(श्रीमद्भा॰ १०/१४/३)

यहाँ 'सन्मुखरितां'का क्या अर्थ है? सम्यक् रूपसे मुखरित। वे साधु हमपर बड़ी कृपा करके हरिकथाओंको कहते हैं। किन्तु साधु भी शुद्ध साधु होना चाहिए तथा वह

रसिक और भावुक भी होना चाहिए। यदि वैसा [उन्नत] साधु नहीं है, तो मध्यम अधिकारी भी कम नहीं है; उसकी हरिकथाको भी सुन सकते हैं। जो अपने अनर्थोंको दूर करनेका प्रयास कर रहे हैं, ऐसे लोगोंका सङ्ग भी लाभकारी है।

'स्थानेस्थिताः'–चाहे वह श्रोता गृहस्थ, त्यागी, उपकुर्वाण [जो ब्रह्मचारी ग्रहस्थ होनेका इच्छुक हो], नैष्ठिक–ब्रह्मचारी, वानप्रस्थ, स्त्री, पुरुष, कर्मी, ज्ञानी, योगी अथवा कोई भी हो, यदि वह निरन्तर उस हरिकथाका (पूर्व–वर्णित पद्धतिके अनुसार) सेवन करता रहे, तो उसका अधिकार एवं उस अधिकारके अनुसार उस हरिकथा–सेवनका फल आगे बढ़ता चला जायेगा।

श्रील विश्वनाथ चक्रवर्त्ती ठाकुर कहते हैं कि यदि वह श्रोता श्रद्धालु है और हरिकथाका आदर करता है, तो वह सर्वप्रथम कथा–स्थलीको और तत्पश्चात् कथा–वाचकको प्रणाम करेगा। वह उस हरिकथाको उद्देश्य करके उसकी महिमाका इस प्रकार गुणगान करेगा कि, 'अहो! संसारसे उद्धार करनेवाली एकमात्र यही हरिकथा है। इस हरिकथासे ही कृष्ण–प्रेम हो सकता है, और कहीं नहीं होगा।' वह इस प्रकार वर्णन करेगा कि, 'अहो! इनकी कथा कितनी सुन्दर है! यह स्थान कितना महिमाशाली है कि यहाँपर भगवान् की लीलाकथाओंका वर्णन किया जा रहा है!' वह पुनः–पुनः श्रोताओंको इस प्रकार लक्ष्यकर प्रणाम करेगा कि, 'ये लोग धन्य हैं जो ऐसी हरिकथाएँ सुनते हैं!' इस प्रकार वह सभीको प्रणाम करेगा।

अथवा [स्थानेस्थितां] कोई किसी भी वर्ण या आश्रममें, अर्थात् विवाहित, अविवाहित, त्यागी, ग्रहस्थ इत्यादि किसी भी अवस्थामें एवं जहाँ कहीं भी हो, यदि वह वहींसे इनका (उपरोक्त हरिकथा, श्रोता इत्यादिका) आदर करता है, तथा यद्यपि उसे अभी भगवत्–प्राप्ति नहीं हुई है, तथापि वह ऐसी 'सन्मुखरित' हरिकथाएँ, जो श्रुतिगतां'—उसके कानोंमें आईं, उन्हें सुनता हुआ और 'तनुवाङ्मनोभि'—उनका तन, मन और देहके द्वारा आदर करता हुआ ही, 'जीवन्ति'—केवल अपना जीवन धारण करता है, तो क्या होगा? 'यें प्रायशोऽजित जितोऽप्यसि तैस्त्रिलोक्याम्',—कुछ समयके बाद अजित भगवान् तत्क्षण ही उसके वशीभूत

हो जाएँगे। कैसे? भगवान् हरिकथाके माध्यमसे उसके हृदयमें प्रवेश करके वहाँ जितनी भी मलिनता है, उस सबको दूर करके तथा उसके हृदयको शरत्–ऋतुके जलकी भाँति सम्पूर्णता निर्मल बनाकर उसमें अपने प्रेमको उत्पन्न कर देते हैं; [अतएव] सबकुछ हरिकथाके श्रवणके द्वारा ही हो जायेगा। श्रील विश्वनाथ चक्रवर्त्ती ठाकुरने बहुत सुन्दर रूपसे इसका वर्णन किया है।

इसलिए हरिकथाके समय सबकुछ छोड़कर हरिकथा श्रवण करो। जहाँ वक्ता श्रोतासे उन्नत वैष्णव न हो, वहाँ हरिनाम करते हुए कुछ हरिकथा सुन सकते हैं। किन्तु यदि वक्ता हमसे उन्नत वैष्णव हों और उनकी कथामें शिक्षाकी बातें हों, तो उनकी कथाके समय हरिनाम करना भी छोड़ दो, अन्यथा ठीकसे श्रवण नहीं हो पायेगा। उस समय एकाग्र चित्त होकर हरिकथाको सुनो। उस समय परिक्रमा इत्यादि जो कुछ नियम हैं, सब छोड़ दो। परिक्रमा करो, किन्तु कब? अलगसे समय निकालकर करो। 'अभी हरिकथा नहीं हो रही, हरिनाम करते हुये परिक्रमा कर लूँ।' गिरिराज गोवर्धनकी परिक्रमा कर सकते हैं, वे प्रेम देनेवाले हैं। वृन्दावन धामकी परिक्रमा करनेसे प्रेम उदित होता है। यमुनाजीको श्रद्धाके साथ प्रणाम करनेसे, उनमें स्नान करनेसे, उनकी स्तव–स्तुति इत्यादि करनेसे प्रेम उदित होता है। ये सब करना चाहिये, किन्तु हरिकथाके समय नहीं, उस समयको छोड़कर। इस प्रकार श्रद्धापूर्वक हरिकथाका सेवन करनेवाला व्यक्ति उन भगवान्‌को जय कर लेता है जो तीनों लोकोंमें अजित हैं।

https://www.facebook.com/srisribhagavatpatrika

श्रीश्रीभागवत–पत्रिकाका संग्रह —
पुराने अङ्कोको डाउनलोड किजिए।

प्रस्तुति – श्रीश्रीभागवत–पत्रिका सेवक–मण्डली